Quest Journals
Journal of Research in Humanities and Social Science
Volume 10 ~ Issue 6 (2022) pp: 82-81
ISSN(Online):2321-9467
www.questjournals.org

Research Paper

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के पाठ्यक्रम में स्वास्थ्य शिक्षा की वर्तमान स्थिती

Mrs. Meenakshi Srivastava, *Research scholar, CMP College Prayagraj*
Dr. Priya SoniKhare, *AssisitantProfessor ,CMP College Pragayraj*

प्रस्तुत अध्ययन माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के पाठ्यक्रम में स्वास्थ्य शिक्षा की वर्तमान स्थिती का पता लगाने के लिए किया गया है अध्ययन हेतु विश्लेषणात्मक विधि एवं सर्वेक्षण विधि साक्षात्कार विधि का प्रयोग किया गया है इस अध्ययन के अंतर्गत एनसीईआरटी की कक्षा 9कक्षा10 कक्षा 11 कक्षा 12 की पुस्तकों के पाठ्यक्रम तथा पाठ्य सहगामी क्रिया ओं का अध्ययन किया गया अध्ययन का मुख्य उद्देश्य एनसीईआरटी की कक्षा 9 कक्षा 10 कक्षा 11 कक्षा 12 के पाठ्यक्रम में वर्तमान समय में स्वास्थ्य शिक्षा को कितना स्थान दिया गया है तथा पाठ्य सहगामी क्रिया ओं के अंतर्गत स्वास्थ्य शिक्षा से संबंधित कितनी गतिविधियों कराई जाती है इनकी जांच करना है।

Received 15 June, 2022; Revised 28 June, 2022; Accepted 30 June, 2022 © The author(s) 2022. Published with open access at ***www.questjournals.org***

प्रस्तावना

आज की शिक्षा का तात्पर्य गत शताब्दियों से भिन्न है। पहले समाज हित पर विशेष ध्यान नहीं दिया जाता था । शिक्षा का तात्पर्य व्यक्ति के विकास से ही समझा जाता था इस विकास का साधन समय समय पर बदलता गया 16 वीं शताब्दी तक प्राचीन साहित्य में निपुणता प्राप्त करना ही उत्तम साधन माना जाता था। वैज्ञानिक पुट का समावेश हमें 17 वीं शताब्दी से मिलता है पर उसका विशेष महत्व नहीं है प्राचीन साहित्य से हटकर धीरे धीरे वे शताब्दी में आधुनिक भाषाओं प्राकृतिक विज्ञान तथा गणित आदि पर बल दिया गया 19 वीं शताब्दी में वैज्ञानिक विषयों को प्रधानता दी गयी अब शिक्षा का कार्य केवल व्यक्तित्व के विकास से ही न था। समाजहित भी उसकी टक्कर में आ गया था विज्ञान के विकास से जीवन क्षेत्र बहुत ही विकसित हो गया भांति भांति की सामाजिक संस्थाओं की स्थापना की जाने लगी शासन प्रबंध की पगड़ी प्रजातंत्र के सिर पर बांधी गयी, नागरिकता का विज्ञापन गला फाड़ फाड़कर किया जाने लगा, अब शिक्षण के आगे समस्या थी कि व्यक्ति और समाज हित में सामंजस्य कैसे स्थापित किया जाए समस्या सरल न थी। व्यक्ति की स्वतंत्रता और उसके व्यक्तित्व की पूरी तरह रक्षा करना

और साथ ही साथ समाज की भी सब प्रकार से दृढ़ बनाना था व्यक्ति की रूचियों का भी आदर करना और उसके उद्योग को इस प्रकार उपयोग करना भी व्यक्ति और समाज हित में सामंजस्य न आ जाए फलत शिक्षा का तात्पर्य व्यक्ति के व्यक्तित्व के विकास के साथ नागरिकता के गुणों को भी व्यक्ति में उत्पन्न करना था वर्तमान युग में सभी प्राचीन शिक्षा विशेषज्ञों की शिक्षा परिभाषाओं से हमें शिक्षा की उपयोगिता पर ही मिलता है उन में हमें मानव वैज्ञानिक वैज्ञानिक तथा लोक संग्रहवाद के सभी प्रधान आदर्शों का समावेश मिलता है ।

भारतीय माध्यमिक शिक्षा का वर्तमान रूप ब्रिटिश शिक्षा व्यवस्था की देन हैं।जिसकी आधारशिला सन 1954 में गुड़ की घोषणा पत्र के द्वारा रखी गयी थी उस समय संभ्रांत वर्ग के कुछ चुने हुए छात्रों के लिए माध्यमिक शिक्षा की व्यवस्था करने की बात कही गई थी। तब से लेकर अब तक माध्यमिक शिक्षा के स्वरूप में अनेक छोटे छोटे परिवर्तन आए हैं कक्षा नौ से कक्षा 10 की शिक्षकों ने माध्यमिक शिक्षा कहते हैं एवं कक्षा 11 से कक्षा 12 तक की शिक्षा को उच्च माध्यमिक शिक्षा कहा जाता है माध्यमिक शिक्षा के अत्यधिक महत्वपूर्ण होने के तीन प्रमुख कारण प्रथम कारण है माध्यमिक शिक्षा सामान्य शिक्षा की परिसमाप्ति है। द्वितीय कारण है माध्यमिक शिक्षा रोजगार तथा जीवन यापन के क्षेत्र के प्रवेश द्वार खोलती है एवं किसी भी राष्ट्र के मानव शक्ति का एक बहुत बड़ा भाग माध्यमिक शिक्षा के स्तर से ही प्राप्त होता है।तृतीय माध्यमिक शिक्षा प्राथमिक शिक्षा ,व उच्च शिक्षा स्तरों की गुणवता को निर्धारित करती है।इसी प्रकार से विश्वविद्यालय और महाविद्यालयों तथा उच्च शिक्षा केंद्रों के लिए छात्रों की पूर्ति का कार्य भी माध्यमिक शिक्षा करती है वास्तव में प्रत्येक स्तर की शिक्षा के लिए माध्यमिक शिक्षा आधार का कार्य करती है। स्पष्ट है इन तीनों की दृष्टि से माध्यमिक शिक्षा स्तर देश की संपूर्ण शिक्षा व्यवस्था को संभालती है राष्ट्र की सुदृढ़ता के लिए अत्यंत आवश्यक है कि हमारे देश में माध्यमिक शिक्षा संपूर्ण शिक्षा क्रम की एक मजबूत कड़ी हो। पाठ्यक्रम अध्यापक के विचारों को छात्रों तक पहुंचाने का प्रमुख साधन है। छात्रों तथा अध्यापकों के बीच वैचारिक तादात्मय स्थापित करने में पाठ्यक्रम एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है

पाठ्यक्रम' शब्द अंग्रेजी भाषा के 'करीक्यूलम' शब्द का हिन्दी रूपान्तर है। 'करीक्यूलम' शब्द लैटिन भाषा से अंग्रेजी में लिया गया है तथा यह लैटिन शब्द 'कुर्रेर' से बना है। 'कुर्रेर' का अर्थ है 'दौड़ का मैदान'। करीक्यूलम' वह क्रम है जिसे किसी व्यक्ति को अपने गन्तव्य स्थान पर पहुँचने के लिए पार करना होता है।

उचित पाठ्यक्रम के अभाव में शिक्षा प्रक्रिया अपंग हो जाती है तथा शिक्षा के निर्धारित उद्देश्यों की प्राप्ति कभी भी संभव नहीं हो पाती।वास्तव में पाठ्यक्रम बालकों के सर्वांगीण विकास के लिए आवश्यक अनुभवों का एक संकलन मात्र है। माध्यमिक शिक्षा का पाठ्यक्रम अपने शासन काल से ही आलोचना का प्रमुख विषय रहा है ब्रिटिश शासकों के द्वारा अपने निहित राजनीतिक स्वार्थों की पूर्ति के लिए बनाए गए पाठ्यक्रम को थोड़ा बहुत परिवर्तन के साथ अभी भी माध्यमिक

कक्षाओं में पढ़ाया जा रहा है वर्तमान पाठ्यक्रम संकुचित एकांगी सैद्धांतिक अनुपयोगी तथा अव्यावहारिक होने के साथ साथ परीक्षा केंद्र भी है। मुदालियर आयोग ने 1952– 53 मे माध्यमिक शिक्षा के पाठ्यक्रम को अत्यंत संकुचित पुस्तकीय बोझिल अमनोवैज्ञानिक परीक्षा केंद्र तथा तकनीकी व व्यावसायिक ज्ञान से रहित बताया था इस आयोग ने पाठ्यक्रम को अनुभवों की समग्रता विविधता व लोचनी यता समुदाय केंद्रित अवकाशोपयोगी तथा सह संवर्धन जैसे सिद्धांतों के आधार पर तैयार करने का सुझाव दिया था।कोठारी आयोग ने 1964 –66 का विचार था कि ज्ञान के विस्तार तथा भौतिक स्वास्थ्य जीव विज्ञान व समाज स्वास्थ्य के बदलते प्रत्याशियों को देखते हुए स्कूल पाठ्यक्रम में व्यापक परिवर्तन लाना आवश्यक है। कोठारी आयोग ने स्कूल पाठ्यक्रम को संकुचित विचारधारा पर आधारित समय प्रतिकूल पुस्तकीय परीक्षा आधारित प्रतियोगितात्मक कार्य व अनुभवों से रहित मानव जीवन से असंबंधित तथा वांछित रूचियों दृ ष्टिकोणों व मूल्यों को विकसित करने में असमर्थ बताते हुए उसकी कटु आलोचना की थी। राष्ट्रीय शिक्षा नीती 1968 के क्रियान्वयन की दिशा में कार्य करने के लिए भारत सरकार ने शिक्षा मंत्रालय ने सन 1973 में एक विशेषज्ञ समिति का गठन किया जो 10+ 2 स्तर के पाठ्यक्रम में सुधार के सुझाव दें इस समिति द्वारा कक्षा 10 तक के पाठ्यक्रम पर तैयार दिशा पत्र पर दिल्ली में सन 1975 में आयोजित राष्ट्रीय पाठ्यक्रम कॉन्फ्रेंस में विचार विमर्श किया गया। तब राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद ने सन 1975 में द कैरिकुलम फॉर द 10 इयर्स स्कूल नामक दस्तावेज तैयार किए। राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद एनसीईआरटी ने सन 1976 मे कक्षा 10 तक के लिए पाठ्यचर्या तथा पाठ्यक्रम पुस्तकें तैयार की एनसीईआरटी द्वारा पाठ्यक्रम तथा पाठ्यचर्या की आलोचना अनेक आधारो पर की गई विषयों की अधिक संख्या तथा कार्य अनुभव को उचित स्थान न दिया जाना इस आलोचना के मुख्य मुददे थे।उपरोक्त वर्णित कार्यक्रम समिति ने +2 स्तर की शिक्षा के व्यवसायीकरण के संदर्भ में भी एक मॉडल रूपरेखा तैयार की जिसपर सन 1976 में आयोजित की गई राष्ट्रीय कांग्रेस में विचार किया गया था। तब राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद एनसीईआरटी, हायर सेकेंडरी एजुकेशन एंड इट्स वोकेशनल नाइजेशन नामक दस्तावेज तैयार करके प्रशासित किया गया। राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद एन सी ई आर टी के प्रयास के द्वारा तैयार किए गए हैं 10+2 स्तर के पाठ्यक्रम की आलोचना की मुखर होने पर भारत सरकार ने कक्षा 10 तक के कार्यक्रम की समीक्षा के लिए ईश्वरभाई पटेल की अध्यक्षता में राष्ट्रीय स्तर के पाठ्यक्रम की समीक्षा के लिए मॉल काम एस आदिशैय्या की अध्यक्षता में सन 1977 में दो पाठ्यक्रम समीक्षा समितियों का गठन किया।इन समितियों को क्रमशः पटेल समिति तथा आदिशैय्या समिति के नाम से भी जाना जाता है।। पटेल समिति ने पाठ्यक्रम निर्माण में वास्तविकता व लोचनीयता पर बल दिया जिससे पाठ्यक्रम को स्थानीय आवश्यकताओं के अनुरूप ढाला जा सके। इस समिति ने पाठ्यक्रम के मानविकी विज्ञान तथा समाजोपयोगी उत्पादक कार्य एसयूपीडब्ल्यू को स्थान देने की सिफारिश की। राष्ट्रीय शैक्षिक एवं प्रशिक्षण परिषद एनसीईआरटी ने सन 1983 से स्कूल पाठ्यक्रम के पुनर्मूल्यांकन का कार्य प्रारंभ किया तथा विचार के उपरांत राष्ट्रीय पाठ्यक्रम की आवश्यकता पर जोर दिया एनसीईआरटी ने 1985 नामक दस्तावेज तैयार किया। समानता ,राष्ट्रीय पहचान, वैचारिक स्वभाव कला व सृजनशीलता, ज्ञान की वृद्धि, अनुगमन

तकनीकी कार्य व शिक्षा का परस्पर संबंध मूल्य शिक्षा तथा वातावरण संसाधन व जनसंख्या जैसे सामाजिक सांस्कृतिक कारकों एवं छात्र केंद्रित स्कूल दायित्व तथा अधिगम पर बल जैसे शैक्षिक कारकों को ध्यान में रखकर यह राष्ट्रीय पाठ्यक्रम तैयार किया गया था।कोर पाठ्यक्रम वास्तव में शिक्षा की राष्ट्रीय प्रणाली की दिशा में एक समग्र प्रयास है।।। नई शिक्षा नीति के संकल्पों को ध्यान में रखते हुए राष्ट्रीय शैक्षिक एवं प्रशिक्षण परिषद एनसीईआरटी ने सन 1988 में कक्षा 9तथा कक्षा 10 की पाठ्यचर्या भी प्रस्तुत की। सन 1988 के उपरांत काफी समय तक इस पाठ्यक्रम की समीक्षा न हो सकी तब पीओए कार्यान्वयन कार्यक्रम 1992 के संकल्पों को ध्यान में रखकर एनसीईआरटी के द्वारा सन 2000 मैं नेशनल कार्यक्रम फ्रेमवर्क फॉर स्कूल एजुकेशन तैयार किया गया । स्वास्थ्य शिक्षा का मुख्य उद्देश्य प्रत्येक नागरिक में शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य की प्राप्ति के प्रति जागरूकता पैदा करना है।

> *स्वास्थ्य शिक्षा के अन्तर्गत* ***पर्यावरण*** *का स्वास्थ्य, दैहिक स्वास्थ्य सामाजिक स्वास्थ्य, भावात्मक स्वास्थ्य, बौद्धिक स्वास्थ्य, तथा आध्यात्मिक स्वास्थ्य सभी आ जाते हैं। स्वास्थ्य शिक्षा ऐसा साधन है जिससे कुछ विशेष योग्य एवं शिक्षित व्यक्तियों की सहायता से जनता को स्वास्थ्य संबंधी ज्ञान तथा* ***औपसर्गिक*** *एवं विशिष्ट व्याधियों से बचने के उपायों का प्रसार किया जा सकता है।*

इसके लिए स्वास्थ्य रक्षा के नियमों से लोगों को परिचित कराना उसकी महत्ता को समझाना और उनमें जागरूकता पैदा करके स्वास्थ्य शिक्षा के कार्यक्रमों को एक आंदोलन के रूप में जन–जन तक फैलाना है। इससे राष्ट्र का भी हित होगा एवं जनसाधारण और राष्ट्रहित में यह आवश्यक भी होगा।छात्रों के पाठ्यक्रम में स्वास्थ्य शिक्षा का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण है क्योंकि स्वास्थ्य शिक्षा के पाठ्यक्रम में रहने से वे विभिन्न प्रकार के कौशलों को अपनी स्वास्थ्य को बेहतर बनाने में प्रयोग कर सकते हैं स्वास्थ्य शिक्षा के द्वारा छात्र अपने स्वास्थ्य के प्रति ज्ञान तो प्राप्त करते ही हैं साथ ही साथ उनके अंदर अभिवृत्तियों एवं अभियंताओं का भी विकास होता **है** विद्यालय ऐसा स्थान हैं जहाँ उन्हें औपचारिक तथा अनौपचारिक दोनों तरीकों से ज्ञान प्राप्त होता है उन्हें कुछ अनुभव प्राप्त होते हैं जो उनके ज्ञान को बढ़ाने में मदद करते हैं स्वास्थ्य शिक्षा से छात्र शारीरिक रूप से सवस्थ होते ही है साथ ही साथ उनका दिमाग भी सवस्थ होता है जिससे वे सभी तरीकों से अपने जिम्मेदारियों को निभाते हैं स्वास्थ्य शिक्षा छात्रों को सिखाती है कि उन्हें किस प्रकार से भोजन करना चाहिए अपनी डाइट को कैसे ध्यान रखना चाहिए ताकि वे सवस्थ जीवन का आनंद ले सकें विद्यालय और परिवार समाज की महत्वपूर्ण इकाई है जो सभी व्यक्तियों के स्वास्थ्य एवं उनके कल्याण से जुड़ी है माता पिता के लिए आवश्यक है कि वह बालक के कपड़े व सामान्य स्वास्थ्य का निरीक्षण नियमित रूप से करते रहे। बालक की मनोवृत्ति अवस्था तथा उसकी परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए उसके सुधार के लिए आवश्यक निर्देशन देते रहे जिससे बालक सरलता पूर्वक अपनी कमियों को दूर कर सके। विद्यालय का उत्तरदायित्व है कि विद्यालय में अध्ययन करने वाले प्रत्येक विद्यार्थी के शारीरिक मानसिक सामाजिक आत्म का एवं सामाजिक स्वास्थ्य का ध्यान रखें और उन्हें अपने स्वास्थ्य

के प्रति जागरूक करने में उनकी मदद करें आज के के समय में यह आवश्यक हो गया है कि सर्वप्रथम छात्रों के मन को समझा जाए मनोवैज्ञानिक भावनात्मक बौद्धिक और आध्यात्मिक रूप से उसका विकास किया जाए। माध्यमिक शिक्षा के पाठ्यक्रम स्वास्थ्य शिक्षा का स्थान उसी प्रकार होना चाहिए जिस प्रकार विज्ञान की शिक्षा के लिए प्रयोगशालाओं का स्थान होता है कुछ लोगों का मानना है कि विज्ञान से निरीक्षण शक्ति की वृद्धि होती है अतः विज्ञान का अध्ययन आवश्यक है परंतु यह जरूरी नहीं है की विज्ञान विषय ही आवश्यक है अन्य विषय भी उतने ही आवश्यक है। तर्क शक्ति के विकास एवं स्मृति शक्ति के विकास के लिए एक सवस्थ मस्तिष्क का होना अत्यंत आवश्यक है क्योंकि व्यक्ति का मस्तिष्क जितना सवस्थ एवं प्रबल होगा उसकी स्मरण शक्ति उतनी ही तीव्र होगी और वह अनेकों निर्णयों को लेने में सक्षम होंगे कल्पना शक्ति भी अनेक मानसिक शक्तियां में से एक है यह प्राकृतिक आपदा होती है इसे बढ़ाया घटाया नहीं जा सकत।।पाठ्यक्रम के अंतर्गत स्वास्थ्य शिक्षा के होने के साथ साथ पाठ्य सहगामी क्रिया ओं के द्वारा भी छात्रों को स्वास्थ्य शिक्षा दी जा सकती है। विभिन्न प्रकार की शैक्षिक गतिविधियों विभिन्न प्रकार की शैक्षिक गतिविधियों एवं पाठ्य सहगामी क्रियाएं जैसे खेल कूद, संगीत की गतिविधियों वाद विवाद, मॉडल बनवाना, कला की गतिविधियाँ ,नृत्य नाटक कहानी लेखन प्रतियोगिता ,निबंध लेखन प्रतियोगिता आठ ग्राफ प्रतियोगिता, सस्वर पाठ, प्रदर्शनियों का आयोजन विभिन्न प्रकार के त्योहारों को मनाना कुछ इनडोर तथा आउटडोर गतिविधियों इन सभी को पाठ्यक्रम के अंतर्गत छात्रों के व्यक्तित्व विकास के विभिन्न पहलुओं को विकसित करने के लिये विद्यालय स्तर पर करवाया जा सकता है।

<u>संबंधित साहित्य का सर्वेक्षण</u>

- कुमार प्रदीप 2019 शारीरिक शिक्षा और खेल में खेल और खेल के बुनियादी ढांचे का विकास प्रस्तुत अध्ययन का मुख्य उद्देश्य जानकारी एकत्र करते समय खेल व्यक्ति और खेल वैज्ञानिक द्वारा पेश की जाने वाली समस्याओं की पहचान करना था अध्ययन में पाया गया कि हमें पाठ्यक्रम का पुनर्गठन करना चाहिये खेल वैज्ञानिक को प्रदान की जाने वाली उत्कृष्ट अनुसंधान सुविधाएं तैयार करना और नीतियों का उचित कार्यान्वयन चिंता के लिए महत्वपूर्ण विषय है इस स्तर पर सभी कमियों को खत्म किया जाना चाहिए
- नेशनल एजुकेशन पॉलिसी 2020 के 2.9 के तहत यह कहा गया है कि सभी विद्यालयों में स्कूलों द्वारा आयोजित नियमित स्वास्थ्य जांच में बच्चों को भाग लेने के लिए प्रेरित किया जाए तथा बच्चों के लिए स्वास्थ्य कार्ड जारी किए जाएं,बच्चों के पोषण और स्वास्थ्य मानसिक स्वास्थ्य सहित कर ध्यान दिया जाए दोपहर के भोजन में बच्चों को क्रमशः पौष्टिक आहार दिया जाए जहाँ तक संभव हो पके हुए एवं गर्म भोजन की व्यवस्था की जाए जहाँ यह संभव न हो वहाँ साधा लेकिन पौष्टिक विकल्प जैसे गुड़ के साथ मूँगफली गुड़ मिश्रित चना या स्थानीय स्तर पर फल उपलब्ध कराए जा सकते हैं सभी बच्चों को विशेष रूप से 100: टीकाकरण के लिए स्कूलों में नियमित स्वास्थ्य जांच कराई जाए और इसकी निगरानी के लिए हेल्थ कार्ड जारी किया जाए।

- नेशनल एजुकेशन पॉलिसी 2020 में 4.4 के तहत यह कहा गया है कि सभी स्तरों पर पाठ्यचर्या और शिक्षण विधि का समग्र केंद्र बिन्दु शिक्षा प्रणाली को रखने की पुरानी प्रथा से अलग वास्तविक समय और ज्ञान की ओर ले जाना है शिक्षा का उद्देश्य केवल संज्ञानात्मक समझ न होकर बल्कि संपूर्ण चरित्र निर्माण और इक्कीसवीं शताब्दी के मुख्य कौशल से सुसज्जित करना है पाठ्यचर्या और शिक्षा विधि को इन लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए पुनः तैयार किया जाए
- नेशनल एजुकेशन पॉलिसी 2020 में 4.5 के तहत यह कहा गया है कि पाठ्यक्रम के अंतर्गत विषयवस्तु प्रत्येक विश्व में कम करके इसे बुनियादी चीजों पर केंद्रित किया जाए पाठ्यक्रम के अंतर्गत विभिन्न प्रकार की पाठ्य सहगामी गतिविधियों जैसे खेल कूद संवाद प्रायोगिक विधियों रचनात्मक विद्या विभिन्न प्रकार के शारीरिक गतिविधियों को रखा जाए ताकि छात्रों में परस्पर सहयोग स्वयं निर्देशित होकर कार्य करना स्वअनुशासन तीन भावना जिम्मेदारी नागरिकता आदि जैसे कौशल विकसित हो सके।
- नेशनल एजुकेशन पॉलिसी 2020 में 4.8 के तहत यह कहा गया है कि पाठ्यक्रम के अंतर्गत खेल समन्वयक कक्षा के दौरान होगा ताकि छात्रों को फिटनेस को एक आजीवन दृष्टिकोण के रूप में अपनाने और फिट इंडिया मूवमेंट में परिकल्पित किए गए अनुसार फिटनेस के स्तर के साथ साथ संबंधित जीवन कौशल प्राप्त करने में मदद मिल सके शिक्षा में खेलों के समन्वय की आवश्यकता को पहले की पहचाना जा चुका है क्योंकि इससे बच्चों के शारीरिक और मनोवैज्ञानिक कल्याण के माध्यम से सर्वांगीण विकास होता है और संज्ञानात्मक क्षमता भी बढ़ती है।

अध्ययन के उद्देश्य

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के पाठ्यक्रम में स्वास्थ्य शिक्षा की वर्तमान स्थिती का विश्लेषणात्मक अध्ययन करना।

अनुसंधान अभिकल्प

अध्ययन विधि

प्रस्तुत अध्ययन हेतु सर्वेक्षण विश्लेषणात्मक विधि एवं साक्षात्कार विधि का प्रयोग किया गया है।

जनसंख्या तथा न्यादर्श का चयन

प्रस्तुत अध्ययन हेतु उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद के कक्षा 9 कक्षा 10 कक्षा 11 कक्षा 12 के एनसीईआरटी के विज्ञान के विज्ञान के पाठ्यक्रम का चयन गया है तथा न्यादर्श हेतु माध्यमिक स्तर के विद्यालयों के पाठ्यक्रम में स्वास्थ्य शिक्षा का स्थान हेतु पांच विद्यालयों से कुल 30 अध्यापकों का चयन साक्षात्कार हेतु किया गया है ।

परीसीमांकन प्रस्तुत अध्ययन कक्षा 9 तथा 10 कक्षा 11 कक्षा 12 के एनसीईआरटी के विज्ञान पाठ्यक्रम तथा पाठ्य सहगामी क्रियाएं तक सीमित है।

प्रयुक्त उपकरण

अध्ययन हेतु , सर्वेक्षण तथा साक्षात्कार विधि का प्रयोग किया गया है।

कक्षा 9 कक्षा 10 कक्षा 11 एवं कक्षा 12 के पाठ्यक्रम का विश्लेषणात्मक अध्ययन

- कक्षा 9 के विज्ञान के पाठ्यक्रम के अंतर्गत कुल 15 अध्याय को रखा गया है जिसमे केवल दो अध्याय ऐसे हैं जिसमें छात्रों को स्वास्थ्य के प्रति जानकारियां दी गई जैसे अध्याय 2 क्या हमारे आस पास के पदार्थ शुद्ध हैं एवं अध्याय 13 हम बीमार क्यों होते हैं दो अध्याय के तहत स्वास्थ्य से संबंधित जानकारियां दी गई।
- कक्षा 10 के विज्ञान के कार्यक्रम के अंतर्गत 16 अध्याय को रखा गया है जिसके अंतर्गत केवल एक अध्याय हमारा पर्यावरण के तहत स्वास्थ्य संबंधी जानकारियां दी गई है।
- कक्षा 11 के विज्ञान के पाठ्यक्रम को तीन भागों में विभाजित किया गया है

भौतिक विज्ञान रसायन विज्ञान जीव विज्ञान

- भौतिक विज्ञान के पाठ्यक्रम के अंतर्गत कुल 15 अध्याय को रखा गया है जिसके अंतर्गत स्वास्थ्य संबंधित कोई भी अध्याय शामिल नहीं है
- रसायन विज्ञान के पाठ्यक्रम के अंतर्गत कुल 12 अध्याय को रखा गया है जिसके अंतर्गत भी स्वास्थ्य से संबंधित कोई भी अध्याय शामिल नहीं है
- जीव विज्ञान के पाठ्यक्रम के अंतर्गत कुल स्टीम 15 अध्याय को रखा गया है जिसके अंतर्गत अध्याय सात जिसका प्रकरण है प्राणियों में संरचनात्मक संगठन अध्याय 12 खनीज पोषण अध्याय 13 प्रकाश संश्लेषण अध्याय 15 पौधों में परिवहन कुल चार अध्याय में स्वास्थ्य संबंधित कुछ जानकारियां दी गई है।

- कक्षा 12 जी विज्ञान के पाठ्यक्रम को तीन भागों में विभाजित किया गया है

- रसायन विज्ञान के कार्यक्रम के अंतर्गत कुल 16 अध्याय को रखा गया है जिसके अंतर्गत अध्याय 16 दैनिक जीवन में रसायन का महत्व के अंतर्गत स्वास्थ्य संबंधित जानकारियां दी गई है
- भौतिक विज्ञान के पाठ्यक्रम के अंतर्गत 15 अध्याय को रखा गया है जिसमें स्वास्थ्य संबंधित कोई भी अध्याय सम्मिलित नहीं है।
- जीव विज्ञान के पाठ्यक्रम के अंतर्गत कुल 16 अध्याय रखा गया है जिसके अंतर्गत मानव जीवन, जन स्वास्थ्य, विकास, मानव स्वास्थ्य तथा रोग, मानव कल्याण में सूक्ष्म जीव, पर्यावरण के मुददे, जैव प्रौद्योगिकी एवं स्वास्थ्य, पारितंत्र कुल 9 आध्याय स्वास्थ्य से संबंधित रखे गए हैं।

पाठ्यक्रम में स्वास्थ्य शिक्षा के स्थान पर अध्यापकों के द्वारा दी गई जानकारियां

- पाठ्यक्रम में स्वास्थ्य शिक्षा से संबंधित विभिन्न गतिविधियों करते हैं जैसे खेलकूद योग आसन बैडमिंटन टेनिस वॉलीबॉल फुटबॉल खो खो कैरम शतरंजन विभिन्न प्रकार की

प्रतियोगिताएं जैसे कहानी लिखना वाद विवाद समूह परिचर्चा, स्काउटिंग गाइडिंग मॉडल प्रतियोगिता का आयोजन करवाया जाता है।

- पाठ्यक्रम में वे स्वास्थ्य शिक्षा से संबंधित कई प्रयोगात्मक कार्य करवातें है। विज्ञान के अंतर्गत उन्हें स्वास्थ्य शिक्षा से संबंधित प्रोजेक्ट दिए जाते हैं एवं विज्ञान प्रयोगशाला में विज्ञान से संबंधित प्रयोगात्मक कार्य करवाया जाते हैं जिसके अंतर्गत उन्हें स्वास्थ्य संबंधित जानकारियां भी दी जाती है।
- व्यक्तिगत तौर पर सुबह सुबह शारीरिक व्यायाम करते है जिसके अन्तर्गत वे योगा के कुछ आसान एवं कुछ तो सुबह सुबह टहलने को अधिक एक महत्वपूर्ण मानते हैं।
- कक्षा में भी शारीरिक स्वास्थ्य संबंधित गतिविधियों करवातें हैं एवं उनके सिद्धांत की जानकारी भी उन्हें देते है
- एक स्वास्थ्य शिक्षा से संबंधित कार्यक्रम के अंतर्गत विद्यालय में प्राथमिक चिकित्सा की व्यवस्था है एवं समय समय पर बाहर से चिकित्सक उनके विद्यालय में छात्रों एवं छात्राओं के नियमित जांच के लिए आते हैं।
- कक्षा में स्वास्थ्य सुरक्षा संबंधी अनेकों प्रोजेक्ट देते हैं जिसके अंतर्गत छात्रों में होने वाली सामान्य बीमारियों से संबंधित प्रोजेक्ट योगा से संबंधित प्रोजेक्ट हैं शामिल है।
- विद्यालयों में किसी भी छात्र को यदि परामर्श की आवश्यकता होती है तो उसे व्यक्तिगत परामर्श करते हैं यदि उसके निर्देशन की आवश्यकता होती है तो वे उसे समय समय पर निर्देशन देते हैं यदि किसी विद्यार्थी को कोई व्यक्तिगत समस्या भी होती है तो वह उसकी समस्या का समाधान करते हैं।
- छात्रों को स्वास्थ्य शिक्षा से संबंधित जानकारी देने के लिए समय समय पर अनेकों प्रकार के प्रजेंटेशन तथा दूरदर्शन रेडियो एवं टेलीविजन के द्वारा कई कार्यक्रम एवं गतिविधियों कराई जाती है।
- अध्यापकों ने स्वास्थ्य शिक्षा से संबंधित कई सुझाव दिए निम्न है

पाठ्यक्रम में स्वास्थ्य शिक्षा का और अधिक स्थान होना चाहिए।इसमें स्वास्थ्य शिक्षा के साथ साथ पाठ्य सहगामी क्रियाएं को भी अधिक स्थान देना चाहिए। विज्ञान के अतिरिक्त इन विषयों में भी में भी पाठ्यक्रम के बारे में जानकारी देनी चाहिए। शारीरिक शिक्षा को भी पाठ्यक्रम में स्थान देना चाहिए विद्यालयों मे प्राथमिक स्वास्थ्य शिक्षा की व्यवस्था होनी चाहिए।

- पाठ्यक्रम में स्वास्थ्य शिक्षा से संबंधित सुधार हेतु अध्यापकों ने कुछ बिंदु बताये पाठ्यक्रम के अंतर्गत प्रत्येक विषय में स्वास्थ्य संबंधित और अधिक इस प्रकरण को जोड़ा जाए।तरह तरह के स्वास्थ्य संबंधी कार्यक्रम विद्यालय में कराया जाए।

*Corresponding Author: Mrs. Meenakshi Srivastava

निष्कर्ष

कक्षा 9 कक्षा 10 कक्षा 11 एवं कक्षा 12 के एन सी ई आर टी विज्ञान के पाठ्यक्रम का विश्लेषण करने पर यह निष्कर्ष आता है छात्रों के पाठ्यक्रम के अंतर्गत स्वास्थ्य शिक्षा को रखने की अत्यंत आवश्यकता है विद्यालय की औपचारिक शिक्षा के अंतर्गत ही विद्यार्थी पूर्ण रूप से शिक्षा ग्रहण करते हैं यदि औपचारिक शिक्षा के दिए जाने वाले पाठ्यक्रम के के अंतर्गत स्वास्थ्य शिक्षा से संबंधित प्रकरण नहीं रखे जाएंगे छात्रों को शारीरिक मानसिक आध्यात्मिक स्वास्थ्य की जानकारी कैसे प्राप्त होगी विद्यालय में बहुत सारे पाठ्य सहगामी क्रियाएं भी करवाई जाती जिसके द्वारा छात्रों को स्वास्थ्य संबंधी जानकारियां एवं उनके स्वास्थ्य का विकास भी किया जा सकता है।विद्यालय में होने वाली पाठ्य सहगामी क्रियाओं में क्रियाओं का विश्लेषण करने हेतु दो विद्यालयों के अध्यापकों से इंटरव्यू के तहत यह जानकारी दी गयी कि कौन कौन सी पाठ्य सहगामी क्रियाएं हैं जो उनके विद्यालयों में अनिवार्य रूप से कराई जाती अध्यापकों के द्वारा दी गई जानकारी के तहत उनके विद्यालय में शारीरिक विकास संबंधी पाठ्य सहगामी क्रियाएं जैसे व्यायाम,परेड, एनसीसी, खेल कूद साइकिल दौड़ योगासन जिमनास्टिक बागवानी करवाई जाती है शैक्षिक विकास संबंधित पाठ्य सहगामी क्रियाएं जैसे वाद विवाद प्रतियोगिता ने निबंध प्रतियोगिता, भाषण,नाटक पुस्तकालय कार्य विभिन्न विषयों के क्लब अतिथि भाषण गतिविधियों कराई जाती है समाज कल्याण संबंधी कुछ पाठ सहगामी क्रियाएं जैसे प्रात वंदना स्काउटिंग गाइडिंग एनएसएस प्राथमिक उपचार गतिविधियाँ कराए जाते हैं कुछ कला एवं विकास संबंधी गतिविधियाँ भी कराई जाती है जैसे चित्रकला प्रतियोगिता चार्ट एवं मॉडल प्रतियोगिता लोक नृत्य सांस्कृतिक कार्यक्रम विविध वेशभूषा प्रतियोगिता, शैक्षिक भ्रमण सम्बन्धित कुछ पाठ से आगामी क्रियाएं होती है जैसे ऐतिहासिक स्थलों का भ्रमण संग्रहालय एवं चिड़ियाघर का भ्रमण शैक्षिक संस्थाओं का ब्राह्मण भ्रमण कारखानों एवं उद्योगों का भ्रमण कुछ अभिरुचि के विकास संबंधी पाठ्य सहगामी क्रियाएं भी करवाई जाती है जैसे साहित्यिक कार्यक्रम संगीत प्रतियोगिताएं फोटोग्राफी वॉल मैगजीन फ्लावर डेकोरेशन ये सभी गतिविधियाँ विद्यालयों में पाठ्य सहगामी क्रियाओं के अंतर्गत सुचारु रूप से करवाई जाती है।

संदर्भ

- कुमार, प्रदीप (2019). शारीरिक शिक्षा और खेल में खेल और खेल के बुनियादी ढांचे का विकास ,*इंटरनेशनल जर्नल ऑफ फिजिकल एजुकेशन एंड स्पोर्ट्स साइंस,* वॉल्यूम 14
- त्रिपाठी, जयनारायण (2021). माध्यमिक शिक्षा स्तर पर योग शिक्षा का विद्यार्थियों के व्यक्तिगत नैतिक मूल्य स्वास्थ्य पर प्रभाव एक अध्ययन ,*शोध गंगा*
- राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020) *मानव संसाधन विकास मंत्रालय भारत सरकार* अध्याय 4 पृष्ठ संख्या 18

- गुप्ता, एस पी (2015) भारतीय शिक्षा का इतिहास विकास एवं समस्याएँ, *शारदा पुस्तक भवन* इलाहाबाद।
- सोनी, प्रकाश ओम (2013). विद्यालय प्रशासन संगठन एवं स्वास्थ्य शिक्षा ,*रस्तोगी पब्लिकेशन,* मेरठ।
- शैरी, जी पी (2016).स्वास्थ्य शिक्षा, *अग्रवाल पब्लिकेशन* आगरा।
- गुप्ता, बाबू राम (2015).विद्यालय प्रशासन संगठन एवं स्वास्थ्य शिक्षा, *आलोक प्रकाशन।*
- सुखिया, एस पी (2014). विद्यालय प्रशासन संगठन एवं स्वास्थ्य शिक्षा ,*अग्रवाल पब्लिकेशन।*
- अश्विना (2019) विज्ञान 9 *एनसीईआरटी पब्लिकेशन* नई दिल्ली
- पौसा (2019) विज्ञान 10 *एनसीईआरटी पब्लिकेशन* नई दिल्ली।
- वैशाखा (2016) रसायन विज्ञान 11 *एनसीईआरटी पब्लिकेशन* नई दिल्ली।
- वैशाखा (2016) जीवविज्ञान 11 *एनसीईआरटी पब्लिकेशन* नई दिल्ली।
- मेधा (2009) भौतिक विज्ञान 11 *एनसीईआरटी पब्लिकेशन* नई दिल्ली।
- चित्रा (2007) भौतिक विज्ञान 12 *एनसीईआरटी पब्लिकेशन* नई दिल्ली
- कार्तिका (2013) जीव विज्ञान 12 *एनसीईआरटी पब्लिकेशन* नई दिल्लीद्य
- रोसा (2007) रसायन विज्ञान 12 *एनसीईआरटी पब्लिकेशन* नई दिल्ली।
- अन्य ई संसाधन

http://sodhganga.inflibnet.ac.in

http://www.reviewofresearch.edu.in

https://ncert.nic.in/pdf/h_focus_group/Swasth%20Aur%20Sharirik%20Shiksha.pdf